कुरआन और हमारी ज़िम्मेदारियां

73

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।

सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमते व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर।

व बअद –

पिछले चार फोल्डर में हमने कुरआने करीम के फ़ज़ाइल और उससे हासिल तालीमात के बारे में जाना। अब इससे पहले कि हम यह जाने कि कुरआन से मुतआल्लिक़ हमारी ज़िम्मेदारियां क्या है ? ज़रा सोचें कि –

अल्लाह ने कुरआन क्यों नाज़िल किया ? क्या इसलिए कि इससे तअवीज़–गन्डे बनाए जाएं और मरीजों व बच्चों को पहनाए जाएं ? या इसलिए कि इसे मुर्दो पर पढ़ा जाए और कुछ हुफ़्फ़ाज़ इसको माल समेटने का ज़रिया बना लें ? या इसलिए कि मक्कार लोग इसे बर्तनों पर लिखा करें और धो धो कर उसका पानी मरीज़ों व असरज़दा लोगों को पिलाएं ? या इसलिए कि इसे रेशमी जुज़दान में लपेट कर मचान की ज़ीनत बनाया जाए या इसलिए कि तबर्रुकन बेटी के जहेज़ में दिया जाए। या इसलिए कि क़व्वाल व गवइये इसे गाएं और सुनने वाले मौसिक़ी की धुन पर उछल कूद करें या इसलिए कि बग़ैर समझे तोतो की तरह इसकी तिलावत की जाए या इसलिए कि क़सम उठाने के लिए इसे सर पर रखा जाए ?

नहीं, यक़ीनन नही। बल्कि यह किताब इसलिए नाज़िल की गई कि दुनिया वाले इसकी आयात पर ग़ौर करें और इसे अपनी ज़िन्दगी का दस्तूर बनाए। पिछली उम्मतों ने आसमानी किताबों का इन्कार तो किया लेकिन उन्हें महज़ मुर्दो के लिए पूंजी नहीं बनाया। मगर बदक़िस्मती से बहुत से मुसलमानों ने इस किताब को मुर्दो को सवाब पहुंचाने का ज़रिया समझ रखा है। वो इसे खोलते हैं तो किसी मरने वाले के करीब या किसी के मर जाने के बाद। जिन करोड़ों अरबों इन्सानों की तब्लीग़ व हिदायत की ज़िम्मदारी हमें दी गई थी। इस किताब को हमने उनसे भी दूर रखा और नतीजतन उन्होंने जंग व तबाही के वो हथियार बनाए जो उनके और हम सब के लिए तबाही व बर्बादी की वजह बने हुए हैं। अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया था ''मैं तुममे दो चीजें छोड़े जा रहा हूं। जब तक इन्हें मज़बूती से पकड़े रहोगे, हरगिज़ गुमराह न होगे। वह दो चीजें 1. अल्लाह की किताब (कुरआन) और 2. मेरी सुन्नत हैं। (मौत्ता मालिक 1601) तारीख़ गवाह हे कि जब हमारे आबाव अजदाद सहाबा किराम रजि. ने इसे मज़बूत पकड़ा और

Please purchase

अपनी ज़िन्दगी का अमल व दस्तूर बना लिया तो कुछ ही सालों में दुनिया के बहुत बड़े हिस्से के रहनुमा बन गए।

क्या आपने कुरआन पढ़ा है ?

अगर नहीं तो यह बड़ी बदनसीबी की बात है। लोग सुबह उठते ही अख़बार पढ़ने के लिए या टीवी पर ख़बरे देखने–सुनने को बैचेन रहते हैं। दुनिया जहान की किताबें पढ़ने का वक्त हमारे पास है, अगर वक्त नहीं है तो अल्लाह की किताब पढ़ने का। जबकि यह किताब न सिर्फ पढ़ने बल्कि समझ कर पढ़ने के लिए नाज़िल हुई है ताकि इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुजारी जा सके। न कि मुर्दो को बख़्शने या बख़्शवाने के लिए। यह किताब लोगों को ग़ौर व फ़िक्र की दावत देती है और ज़िन्दों पर निजात की राह खोलती है। इसे समझ कर पढ़ने से ख्यालात में निखार पैदा होता है और ज़िन्दगी सवांरना आसान हो जाता है। लेकिन अफसोस! बहुत थोड़े लोग होगें जिन्होंने इसे तरजुमे के साथ और समझ कर पढ़ा होगा ? कभी सोचा कि जब हम इसे समझ कर पढ़ेगें ही नहीं तो हमें इसकी तालीमात का इल्म भी नहीं होगा और जब इल्म ही नहीं होगा तो इस पर अमल कैसे कर पाएगें ? कैसे इसके मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ार पाएगें?

क्या कुरआन सिर्फ उलैमा के समझने के लिए है ?

अगर ऐसा होता तो अल्लाह यह न फ़रमाता कि "हमने कुरआन को समझने के लिए आसान बनाया है तो कोई है जो नसीहत हासिल करे।" (क़मर, आयत 17, 22, 32, 40) कुरआन हर ख़ास व आम मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम सब के लिए समझने की किताब है। इसकी दावत भी सारी इन्सानियत के लिए है। अल्लाह ने इस किताब में अपने बन्दों को क्या करने के हुक्म दिये हैं और किन बातों व कामों से मना किया है ? यह हम तभी जान पाएगें जब इसे समझ कर पढ़ेगें। अरबी न जानना कोई ऐब नहीं है। अल्लाह के फ़ज़्ल से आज तक़रीबन हर ज़बान में इसके तरजुमे व तफ़ासीर मौजूद हैं। जिन की मदद से कुरआन को आसानी से समझा जा सकता है। इतनी सहुलतों के बावजूद अगर हम इसे समझने और इससे रहनुमाई हासिल करने की कोशिश न करें तो क़यामत के दिन खुद ही जवाब देह होगें। इसलिए कि अल्लाह की किताब हमारे पास मौजूद है मगर हमें यह जानने की फ़िक्र ही नहीं है कि इसमें जो लिखा है उसका क्या मतलब है ? या अल्लाह ने इसकी शक्ल में हम तक क्या पैग़ाम पहुंचाया है ?

रोज़े क़यामत आप सल्ल. की शिकायत

इर्शादे बारी है "और पैग़म्बर कहेगें कि ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ रखा था।" (फ़ुरकान, आयत– 30) जहां इस किताब पर ईमान न लाना इसको छोड़ना है वहीं इसमें ग़ौर न करना और इसे समझ कर न पढ़ना भी इसे छोड़ना ही है। इसके अहकाम पर अमल न करना और इसमें

e 'e-PDF Converter and Creator' on http://www.e-pdfconverter.com

जिन बातों से रोका गया है उनसे न रुकना भी इसे छोड़ने जैसा ही है। कुरआन को नज़र अन्दाज करके नाविलों, खेल तमाशों व गीत संगीत वगैरह में मसरुफ रहना भी इसे छोड़ना है। कुरआन को समझ कर न पढ़ना, उससे रहनुमाई हासिल न करना और इसके मुताबिक ज़िन्दगी न गुज़ारना भी इसे छोड़ना है। अगर हम यह चाहते हैं कि कल क़यामत के दिन अल्लाह के रसूल सल्ल. कुरआन को छोड़ देने के बारे में अल्लाह से हमारी शिकायत न करें तो हमें कुरआन की तरफ पलटने, उसे समझने, समझ कर पढ़ने और उसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करना होगी। अल्लाह इस बाबत हमारे लिए आसानी पैदा करे।

कुरआन की हम पर ज़िम्मेदारियां

1. कुरआन पर ईमान लाया जाए –

है न अजीब बात कि मुसलमान से कहा जाए कि कुरआन पर ईमान लाओ। हालांकि इस पर ईमान लाए बग़ैर कोई शख़्स मुसलमान कहला ही नही सकता। दरअसल यह इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि ईमान सिर्फ ज़बान से इक़रार कर लेने का नाम नहीं है बल्कि दिल से यक़ीन करना भी जरुरी होता है। जिस चीज़ पर हम यक़ीन रखते हैं उसके ख़िलाफ़ नहीं करते। जैसे हम जानते है कि आग का काम जलाना है वह जलाती है तो हम आग में अपने जिस्म का कोई हिस्सा नहीं डालते बल्कि उससे बचाते हैं। फिर यह कैसे मुमकिन है कि कोई दिल से कुरआन पर ईमान भी लाए और अमल उसके ख़िलाफ करे। कहीं ऐसा तो नहीं कि हम ज़बान से तो कहते हैं कि कुरआन अल्लाह का कलाम है लेकिन यक़ीन की दौलत से शायद महरुम हैं। अगर ऐसा न होता तो इसके हर–हर अहकाम पर अमल करने की हम भरपूर कोशिश करते। कुरआनी तालीमात हमारा ओढ़ना–बिछौना होती। अगर हम दिल से यक़ीन कर लें कि यह अल्लाह की किताब है जो हमारी हिदायत के लिए नाज़िल की गई है तो हम इसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए इसे समझ कर पढ़ने की हर मुमकिन कोशिश करें।

2. कुरआन की तिलावत की जाए

कुरआन की हम पर एक ज़िम्मेदारी यह है कि इसकी तिलावत ज़्यादा से ज़्यादा करें और तिलावत भी इस तरह करें जिस तरह तिलावत करने का हक़ है। तिलावते कुरआन चूंकि हमारी रुह के लिए ग़िज़ा का काम करती है तो हमें चाहिये कि तिलावत अच्छे अन्दाज़ में और ठहर–ठहर कर करें।

आदाब – तिलावते कुरआन के आदाब में जहां जिस्म व कपड़ों का पाक होना ज़रुरी है वहीं तिलावत से पहले आऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम व बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम भी पढ़ना चाहिये। इनके अलावा पहला एहतेमाम करें तजवीद का।

तजवीद – इससे मुराद अरबी हुरुफ की पहचान, उनकी सही अदायगी और

...n to remove this message.

क़िराअत के बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल करना है। यह इसलिए ज़रुरी है कि इसके बग़ैर सही तिलावते क़ुरआन मुमकिन नहीं है बल्कि मआनी के बदल जाने का इमकान रहता है। जैसे लफ़्ज़े क़ुल का मतलब होता है ''कहो'' लेकिन उसे अगर 'कुल' पढ़ा जाएगा तो 'कुल' का मतलब हो जाएगा कि खाओ। इस बात का भी ख़्याल रखा जाए कि जहां ज़बर है वहां ज़ेर न पढ़ा जाए और जहां ज़ेर है वहां पेश न पढ़ा जाए। बल्कि हर हर्फ़ और हर लफ़्ज़ को सही पढ़ा जाए।

रोज़ाना का मामूल

आप रोजाना जितना आसानी से पढ़ सकें, उतना रोज़ पढ़ने की आदत बनाएं। यह न करें कि कभी पढ़े और कभी न पढ़े। इसकी तिलावत पाबन्दी से इसलिए भी करना चाहिये क्योंकि इसके पढ़ने से ईमान बढ़ता है। जैसा कि इर्शादे बारी तआला है ''ईमान वाले तो ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल दहल (लरज़) जाते हैं और जब अल्लाह की आयते पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ने लगता है। यह लोग अल्लाह पर खूब भरोसा रखते हैं।'' (अनफ़ाल– आयत– 02)

अच्छी आवाज़

क़ुरआन को अच्छी आवाज़ में पढ़ना चाहिये। इसलिए कि आप सल्ल. का इर्शाद है ''तुम क़ुरआन को अपनी खूबसूरत आवाज़ में पढ़ा करो।'' (अबु दाऊद– 1468 सही) और यह कि ''वह शख़्स हम में से नहीं जो क़ुरआन को अच्छी आवाज में न पढ़े।'' (बुख़ारी– 7527)

तरतील – यह भी ज़रुरी हे कि तिलावते क़ुरआन तरतील से की जाए। तरतील का मतलब है ठहर–ठहर कर पढ़ना। आप सल्ल. भी क़ुरआन ठहर–ठहर कर पढ़ा करते थे। जैसा कि उम्मे सलमा रजि. का बयान है कि आप सल्ल. अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन पढ़ते और ठहरते। इसी तरह बाक़ी क़िराअत किया करते थे। (अबु दाऊद–4001, तिर्मिजी 2695)

हिफ़्ज़ – हर शख़्स के लिए पूरा क़ुरआन हिफ़्ज़ करना तो मुश्किल है लेकिन जितना ज़्यादा क़ुरआन याद किया जा सके, करे। ताकि नफ़िल नमाज़ों में ख़ास कर तहज्जुद में ज़्यादा से ज़्यादा क़ुरआन पढ़ सके। इसलिए कि ''क़यामत के दिन हाफ़िज़े क़ुरआन के वाल्दैन को इतने क़ीमती लिबास पहनाए जाएगें कि उनके मुक़ाबले में दुनिया की हर चीज़ हीच होगी। यह बदला होगा अपने बच्चे को क़ुरआन सिखलाने का।'' (सिलसिला अहादीस सहीहा 2829)

3. क़ुरआन को समझा जाए

क़ुरआन दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब है। मगर इस मआनी में यही सबसे मजलूम किताब भी है जो बग़ैर समझे पढ़ी जाती है। ऐसा नहीं

Please purchase 'a PDF (

है कि बग़ैर मआनी के समझे की गई तिलावत पर सवाब नहीं मिलता। ज़रुर मिलता है बल्कि हर हर्फ़ की तिलावत पर दस नेकियां मिलती हैं। (तिर्मिजी 2680 सही) हम दुनियावी तालीम हासिल करने के लिए तो 15–20 साल लगा देते हैं। दौलत कमाने के लिए परदेस जाते हैं तो अजनबी या अरबी ज़बान भी सीख लेते हैं। लेकिन अल्लाह का कलाम समझ कर सीखने पढ़ने के लिए हम वक़्त नहीं निकाल पाते। फिर यह दावा कि हम कुरआन वाले हैं। क्या अपने अन्दर कुछ वजन या सच्चाई रखता है? यह सच है कि कि तिलावते कुरआन कितनी ही ज़्यादा क्यों न की जाए उससे दिल नहीं भरता और न ही उकताहट महसूस होती है। लेकिन उसमें गौ़र व फ़िक्र करने और उसे समझ कर पढ़ने का मज़ा ही कुछ और होता है।

4. कुरआन पर अमल किया जाए

इसको पढ़ना समझना और इस पर ईमान रखना तभी फ़ायदेमंद है जब इस पर अमल किया जाए। इसे अपनी ज़िन्दगी के लिए रहनुमा बनाया जाए। इस किताब में हर–हर इन्सान के लिए हिदायात मौजूद हैं। यह हमें बताता है कि हम क्या काम करें और किन कामों व बातों से बचें। अगर हम अल्लाह के क़ानून को खुद अपने अन्दर भी नाफ़िज़ न कर पाएं तो यह बड़ी ना शुक्री की बात है। इसलिए कि इर्शादे बारी है ''जो लोग अल्लाह के नाज़िल किये हुए (कुरआन) के मुताबिक़ फैसले नहीं करते वो इन्कार करने वाले (काफ़िर) हैं। (माइदा आयत 44) इसलिए हमें चाहिये कि कुरआन को इस नीयत से पढ़े और समझे कि हमे हर मुमकिन हद तक इस पर अमल करना है।

जो लोग कुरआन की सिर्फ तिलावत करते हैं और उस पर अमल नहीं करते। उनके लिए इस बात का भी इमकान है कि बे समझे की गई उनकी यह तिलावत खुद उनके हक़ में नुक्सान देह न हो। इमाम ग़ज़ाली रह. अहया अल उलूम में लिखते हैं कि ''कुरआन को पढ़ने वालो में कुछ ऐसे हैं जिन्हें सिवाए लअनत के कुछ नहीं मिलता। इसलिए कि जब वह लअनतुल लाहि अलल काज़िबीन (आले इमरान आयत–61) यानि झूंठ बोलने वालों पर अल्लाह की लअनत हो और लअनतुल्लाहि अलज़ ज़ालिमीन (हूद आयत–18) यानि ज़ुल्म करने वालों पर अल्लाह की लअनत हो कहते है तो अगर वह झूंट बोलते हैं या अल्लाह के बन्दों पर ज़ुल्म करते हैं तो यह लअनत खुद उन पर पड़ती है। इसी तरह कम तौलने या नापने वाले, पीठ पीछे बुराई करने वाले और ताना देने वाले कुरआन पढ़ते हुए खुद कुरआन की बतलाई दर्दनाक सज़ाओं के हक़दार ठहरते हैं।

5. कुरआन को दूसरों तक पहुंचाया जाए –

कुरआनी तालीमात को गै़र मुस्लिमों तक पहुंचाना भी हम मुसलमानों की ज़िम्मदारी है। क्योंकि कुरआन सिर्फ़ मुसलमानों की किताब नहीं है बल्कि तमाम जिन्न व इन्सानों की रहनुमाई के लिए नाज़िल की गई है।'' (बक़रह–

Converter and Creator' on http://www.e-pdfconverter.com to remo

आयत 185 /इब्राहिम– आयत 52) और यह कि ''ऐ रसूल (सल्ल.) जो कुछ तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है, उसे (उसे दुनिया वालों तक) पहुंचा दो। (माइदा आयत 67) इसी तरह अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया ''बल्लिगु अन्नी वलौ आया'' यानि पहुंचा दो मेरी तरफ़ से चाहे एक आयत ही क्यों न हो।'' (बुख़ारी– 3461, दारमी– 558, अहमद–6486, तिर्मिजी– 2454) अगर हम (अपनी ताक़त, इस्तेताअत व इल्म के मुताबिक़) इसे दुनिया वालों तक नहीं पहुंचाएगे तो फिर कौन पहुंचाएगा ? जिन लोगों तक अल्लाह का पैग़ाम अभी तक नहीं पहुंचा। उन तक इसे पहुंचाने की ज़िम्मेदारी अब आप सल्ल. की उम्मत पर है। आप सल्ल. ने अपनी नबवी ज़िन्दगी के 23 सालों में इस ज़िम्मेदारी को निभाया। जिसके नतीजे में कुछ ही सालों में दुनिया के काफ़ी बड़े हिस्से में लोगों ने हिदायत पाई। अब यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इसे हिक्मत के साथ नर्म लहजे में ग़ैरमुस्लिमों तक पहुंचाए। ताकि अल्लाह के वो बन्दे जो अपने पुरखों के तरीके पर चलने और इस्लामी तालीमात से अन्जान रहने की वजह से इससे दूर हैं वो एक अल्लाह की बन्दगी (इबादत) करने वाले बन जाएं। उनके गुनाह नेकियों में बदल जाएं और वो भी अल्लाह की मेहरबानी से जहन्नम से बचकर जन्नत के वारिस हो जाएं। यह बात भी हम ही बेहतर जानते हैं कि इस ज़िम्मेदारी को हम कितना निभा रहे हैं ? सच यह है कि बहुत से मुसलमान खुद कुरआन से दूर हैं। ग़ैरों की तो बात क्या हम अपनी औलाद तक सही मआनो में कुरआन नहीं पहुंचा पाए। हम खुद उन्हें दीनी तालीम के बजाए दुनियावी इल्म हासिल करने की तरफ़ धकेल रहे हैं और इसके एवज़ में मोटी रक़म भी अदा करते हैं। यह ज़िम्मेदारी हालांकि उलैमा की ज़्यादा है लेकिन हममें से भी जिसने जितना कुरआन पढ़ा और सीखा है, उसे दूसरों तक अच्छे अन्दाज़ में उनकी ख़ैर ख़्वाही की नीयत से पहुंचाना उनके भी ज़िम्मे है। आप सल्ल. का फ़रमान भी है ''तुम में बेहतरीन शख़्स वह है जो कुरआन सीखे और दूसरों को भी सिखाए।'' (बुख़ारी–5027, तिर्मिजी –2677) और ''यक़ीनन तुम में सबसे अफ़ज़ल वह है जिसने कुरआन सीखा और दूसरों को भी सिखलाया।'' (बुख़ारी–5028)

अल्लाह से दुआ है कि वह हमें कुरआन को समझ कर पढ़ने उसके मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारने और उसके हुकूक अदा करने की तौफ़ीक दे और हमें अपने दीन की सीधी राह पर चलाए। आमीन

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639
09887239649